गुप्त जल

एक चीनी लोक कथा

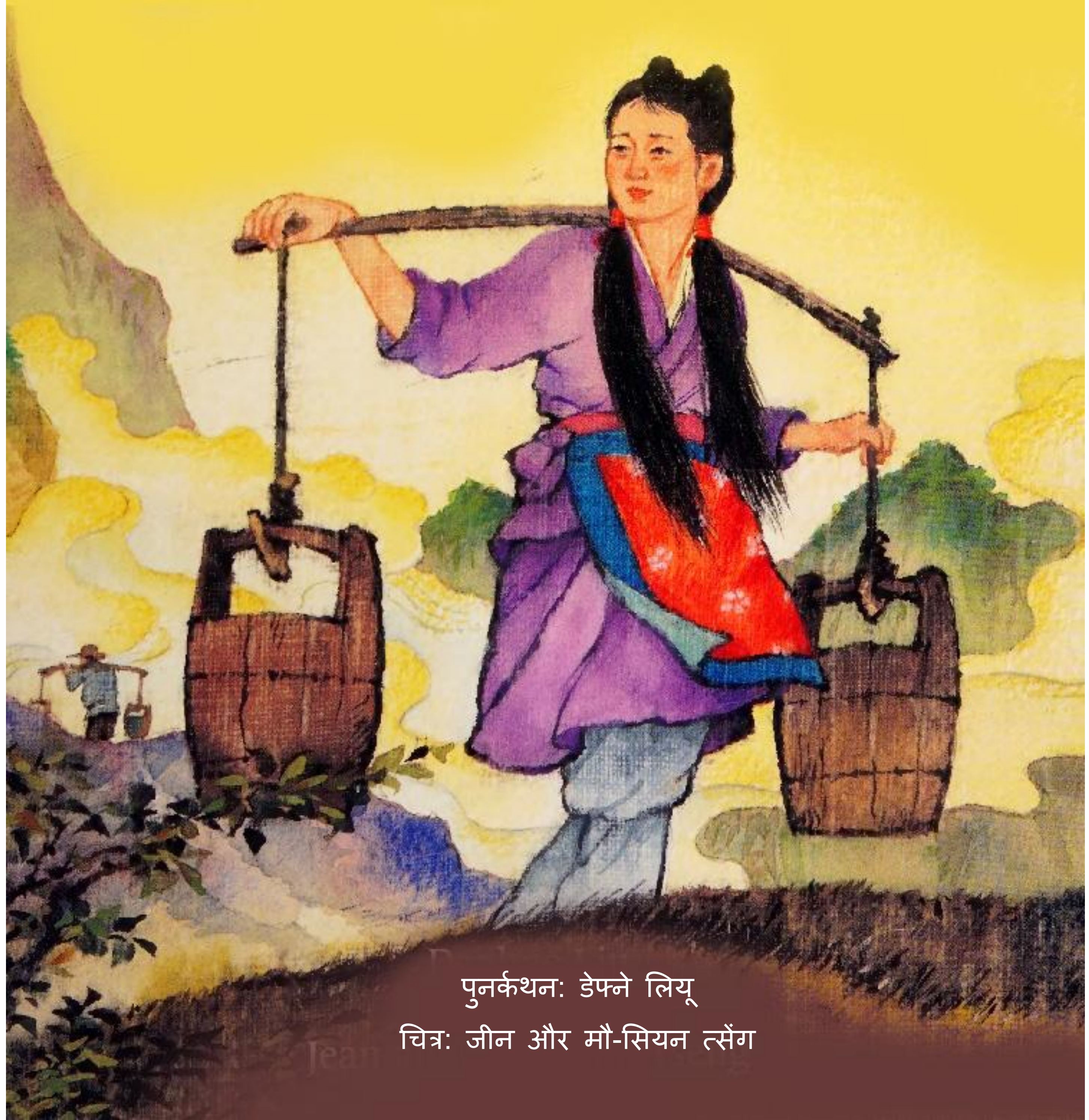

पुनर्कथन: डेफ्ने लियू

चित्र: जीन और मौ-सियन त्सेंग

गुप्त जल

एक चीनी लोक कथा

पात्र

शू फ़ा

चाचा और चाची

पहाड़ की आवाज़

शू फ़ा के गाँव को पानी की ज़रूरत है.

वह कैसे मदद कर सकती है?

गुप्त जल

एक चीनी लोक कथा

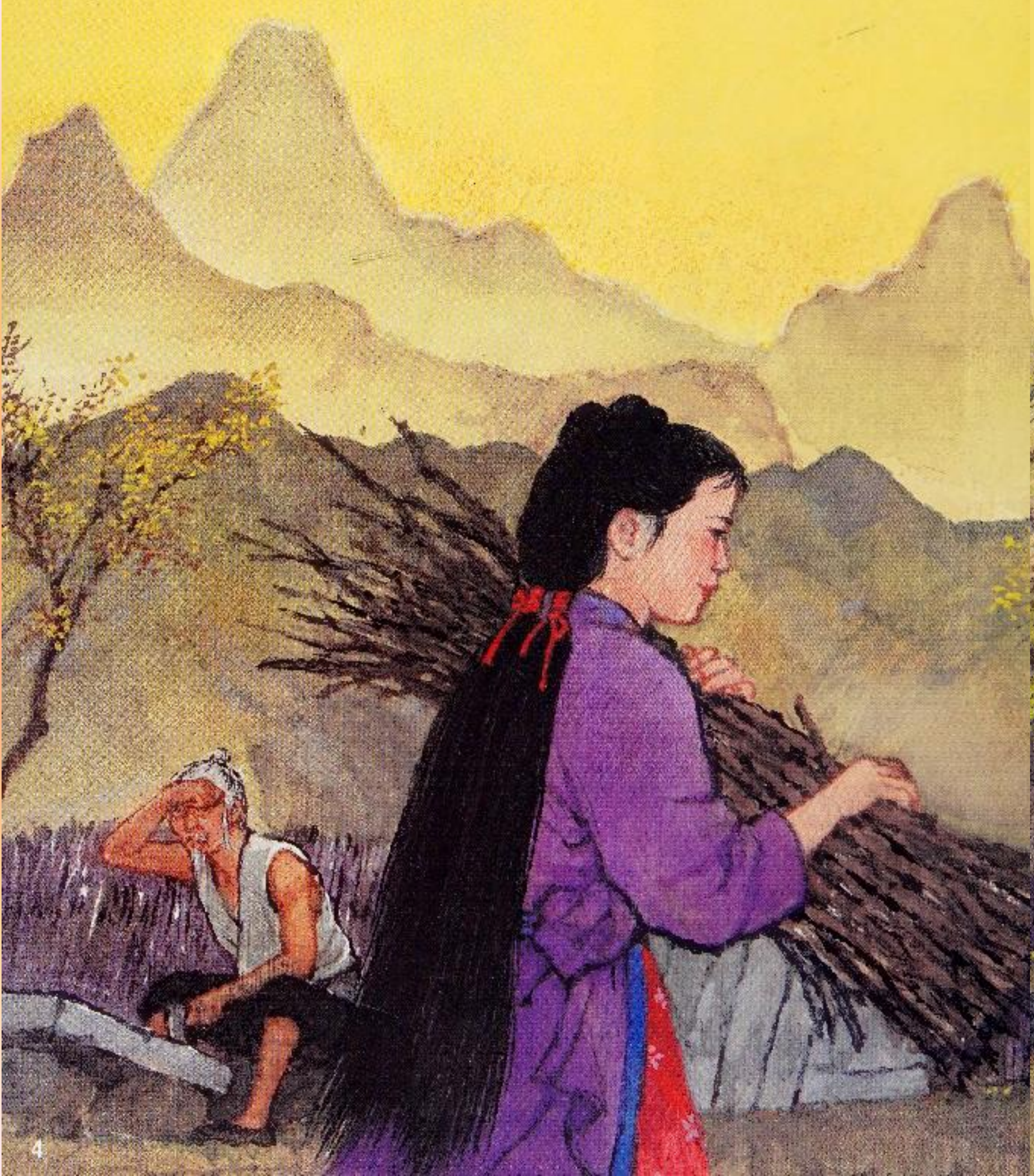

शू फ़ा अपने चाचा-चाची के साथ रहती है.
वे पहाड़ के पास एक गाँव में रहते हैं.
वहाँ की ज़मीन सूखी और धूल भरी है.
गाँव के आसपास पानी नहीं है.

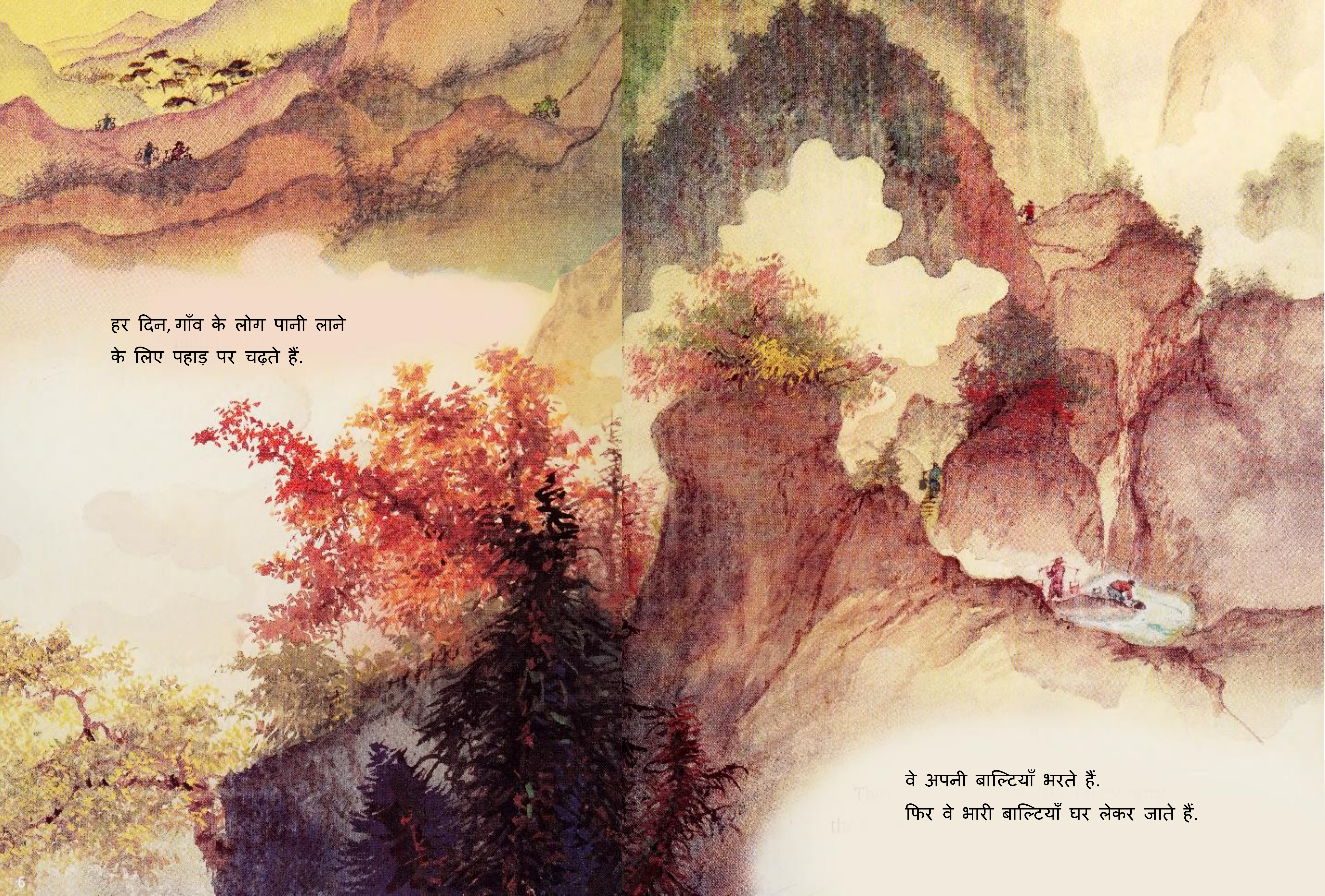

हर दिन, गाँव के लोग पानी लाने
के लिए पहाड़ पर चढ़ते हैं.

वे अपनी बाल्टियाँ भरते हैं.
फिर वे भारी बाल्टियाँ घर लेकर जाते हैं.

हमें पानी चाहिए!

मैं दो बाल्टियाँ ले जा रही हूँ.

तुम एक लेकर जाओ.

हमें पानी चाहिए.

हम दिनभर धूप में काम करते हैं.

मैं एक बाल्टी लेकर जा रहा हूँ.

तुम दो लेकर आना.

देखो, हम आराम नहीं कर सकते.

क्योंकि हमें काम करना है!

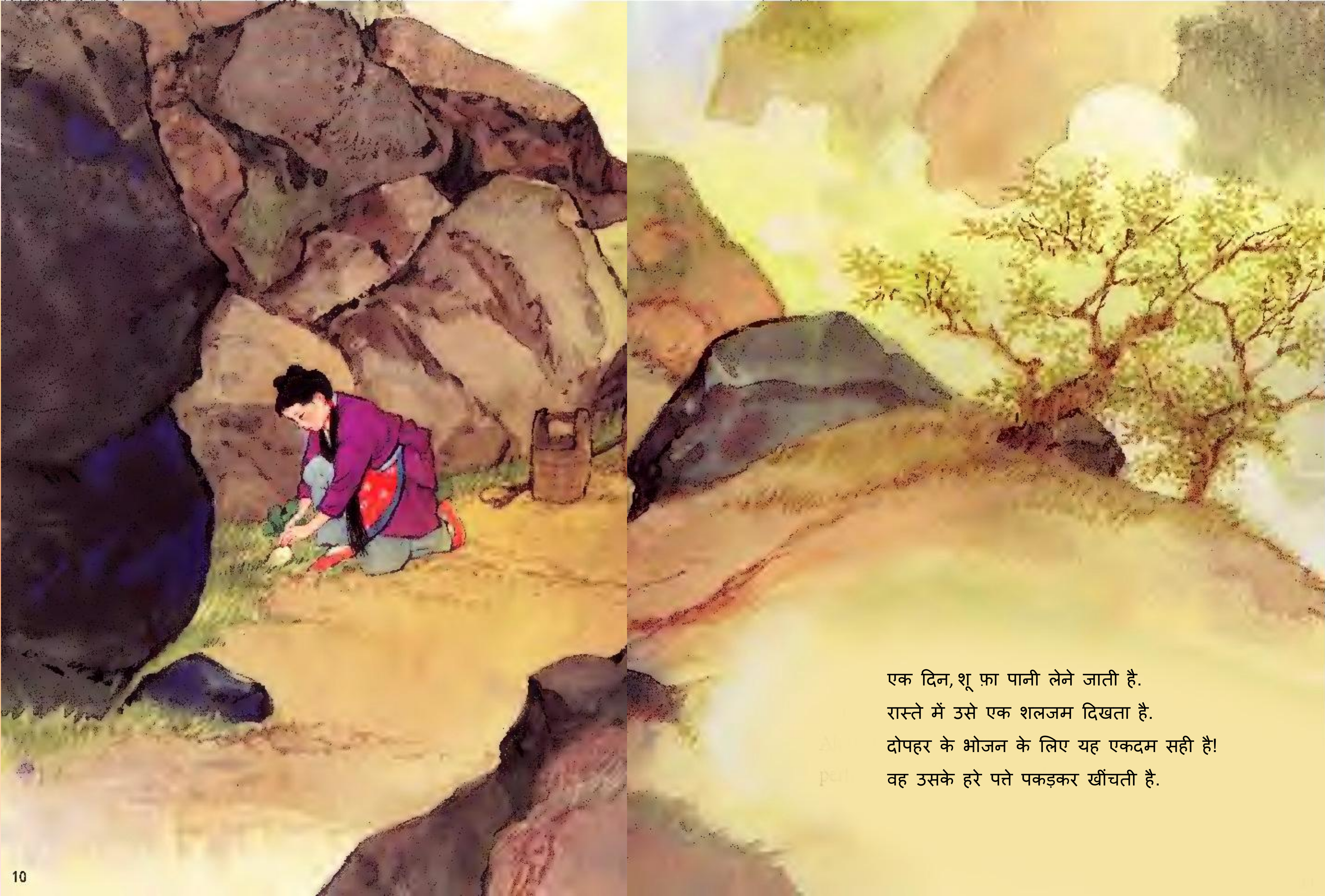

एक दिन, शू फ़ा पानी लेने जाती है.
रास्ते में उसे एक शलजम दिखता है.
दोपहर के भोजन के लिए यह एकदम सही है!
वह उसके हरे पत्ते पकड़कर खींचती है.

ठक्क!

गड्ढे से पानी निकलता है. शू फ़ा उछलती है!

वह सोचती है, "अब हमें पानी के लिए इतनी दूर नहीं जाना पड़ेगा."

वह बहुत खुश होती है!

अचानक, तेज़ हवा चलती है.
वो शलजम को वापस गड्ढे में धकेल देती है.
एक तेज़ आवाज़ कहती है,
"मेरे पानी को मत छुओ!"

शू फ़ा पूछती है, "तुम कौन हो?"
"मैं पहाड़ की आवाज़ हूँ.
यह मेरा पानी है. उसके बारे में किसी को मत बताना!"
"लेकिन हमें पानी चाहिए!" शू फ़ा रोती है.
"नहीं! मैं किसी के साथ अपना पानी साझा नहीं करता!"
आवाज़ ने कहा.

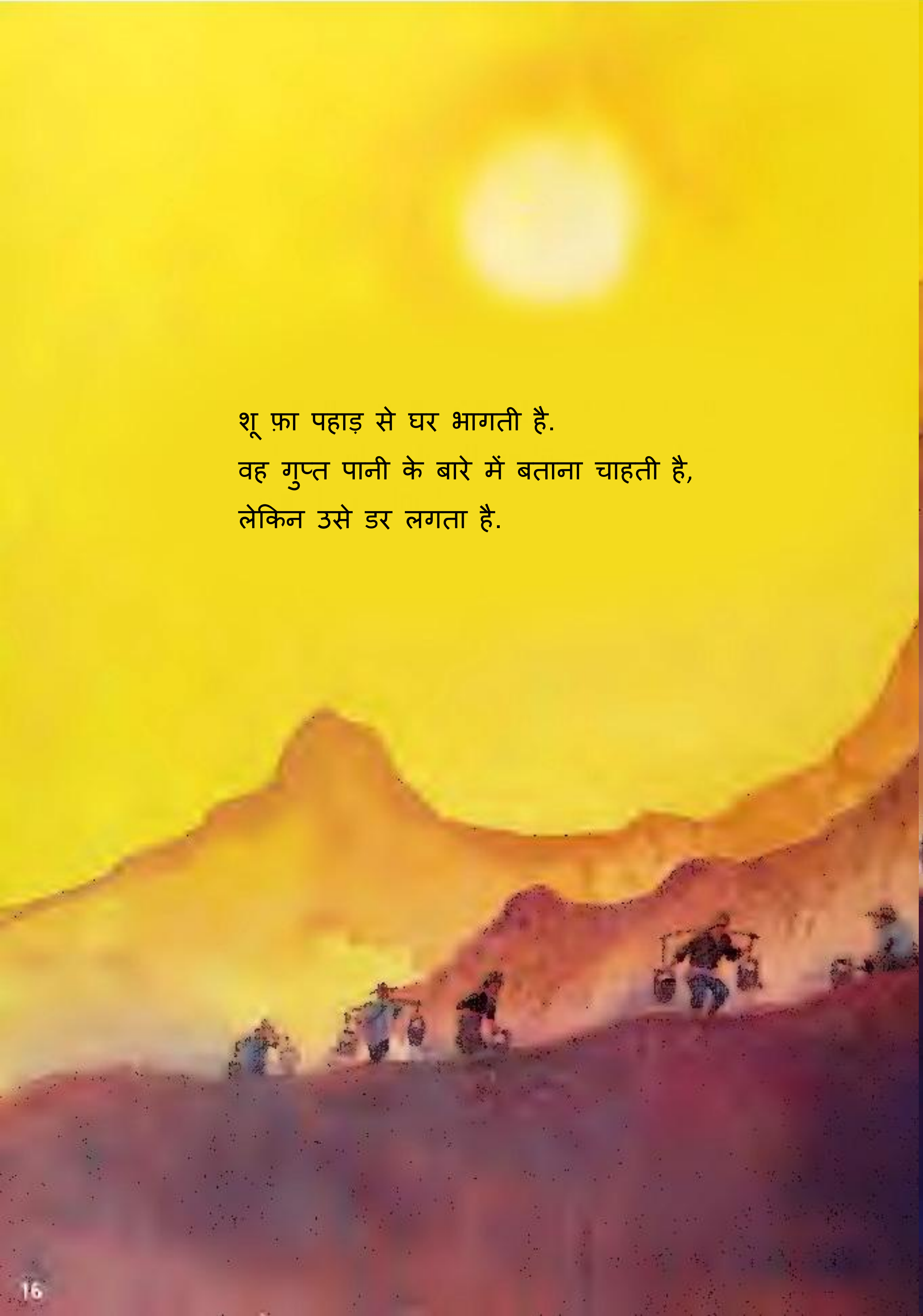

शू फ़ा पहाड़ से घर भागती है.
वह गुप्त पानी के बारे में बताना चाहती है,
लेकिन उसे डर लगता है.

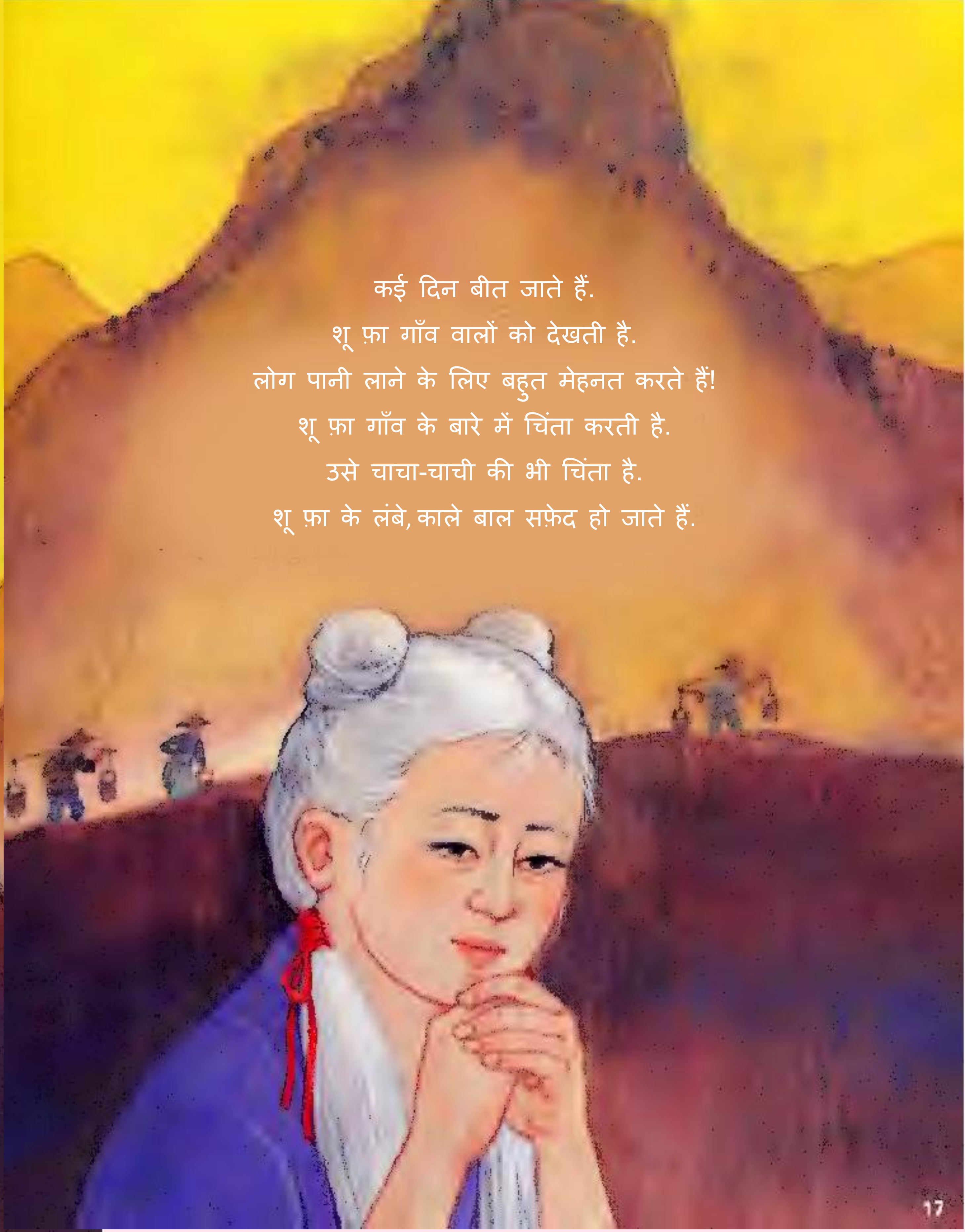

कई दिन बीत जाते हैं.
शू फ़ा गाँव वालों को देखती है.
लोग पानी लाने के लिए बहुत मेहनत करते हैं!
शू फ़ा गाँव के बारे में चिंता करती है.
उसे चाचा-चाची की भी चिंता है.
शू फ़ा के लंबे, काले बाल सफ़ेद हो जाते हैं.

पानी के लिए रोना

बेचारी बूढ़ी चाची!
वो धूप में काम करती हैं.
वह पानी के लिए रोती है,
और वह अकेली नहीं है.

बेचारे बूढ़े चाचा!
वो भी धूप में काम करते हैं.
वह पानी के लिए रोते हैं, और
वो भी अकेले नहीं है.

एक दिन चाचा लड़खड़ाकर गिर जाते हैं
और उनके सिर में चोट लग जाती है.
"बाप रे!" वो रोते हैं.
शू फ़ा भी रोती है.
उसे अपने चाचा की मदद करनी चाहिए.
उसे गाँव के नज़दीक पानी लाना चाहिए!

शू फ़ा पहाड़ पर चढ़ती है.
इस बार वो शलजम को कुचल देती है.
फिर छेद में तेजी से पानी बहने लगता है.

पानी लगातार बहता रहता है.
पानी एक नदी बन जाता है.
गाँव वाले पानी को देखते हैं.
वे बहुत खुश होते हैं!

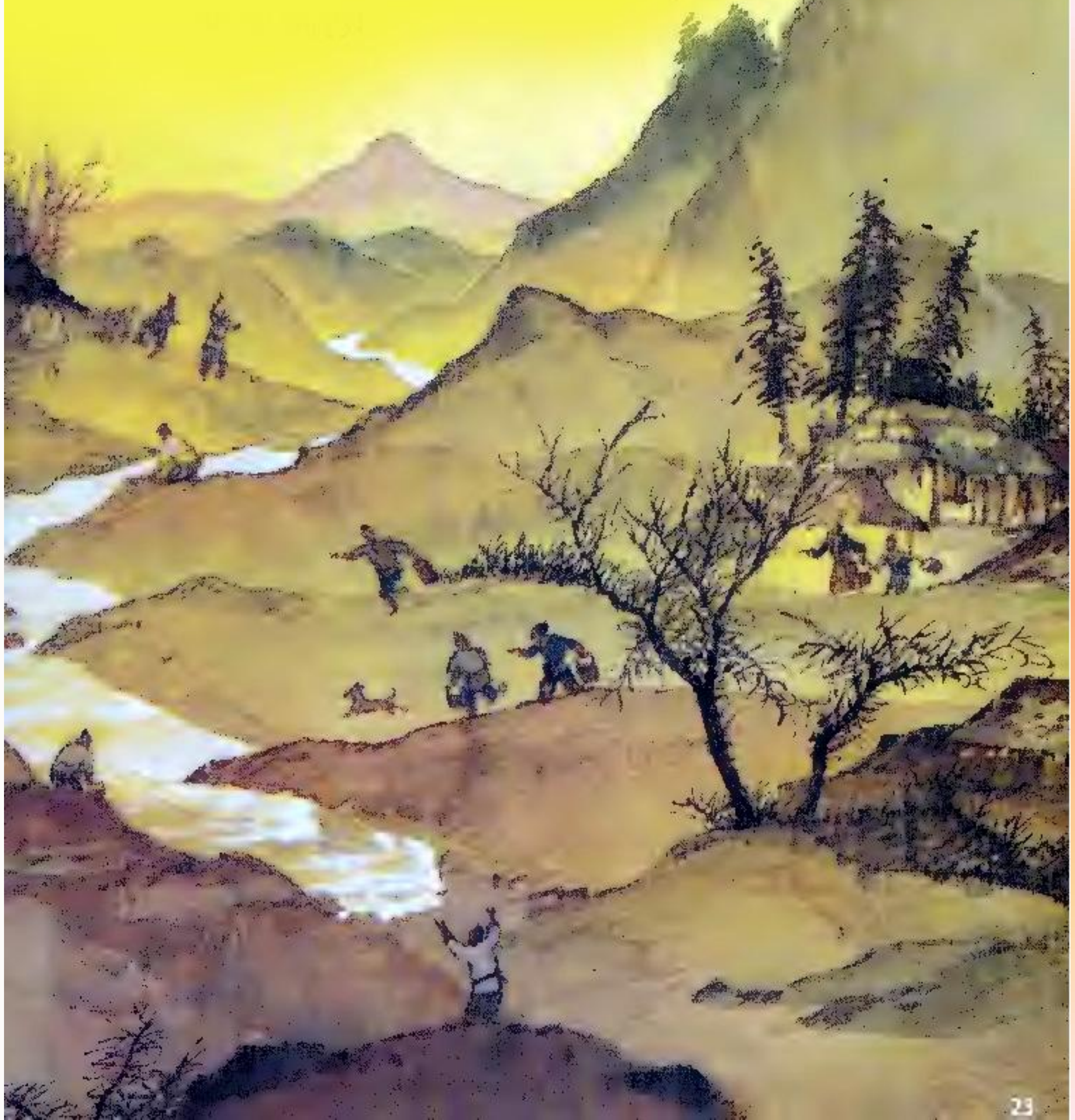

नदी

अब एक नदी है.
वो बहुत बड़ी है! वो बहुत पास है!
लोग उसका पानी ले सकते हैं.
वे चिल्लाते हैं, और जयकार करते हैं.

अब एक नदी है.
वो चौड़ी है! वो लंबी है!
अब लोग रो नहीं रहे हैं.
वे खुश हैं.

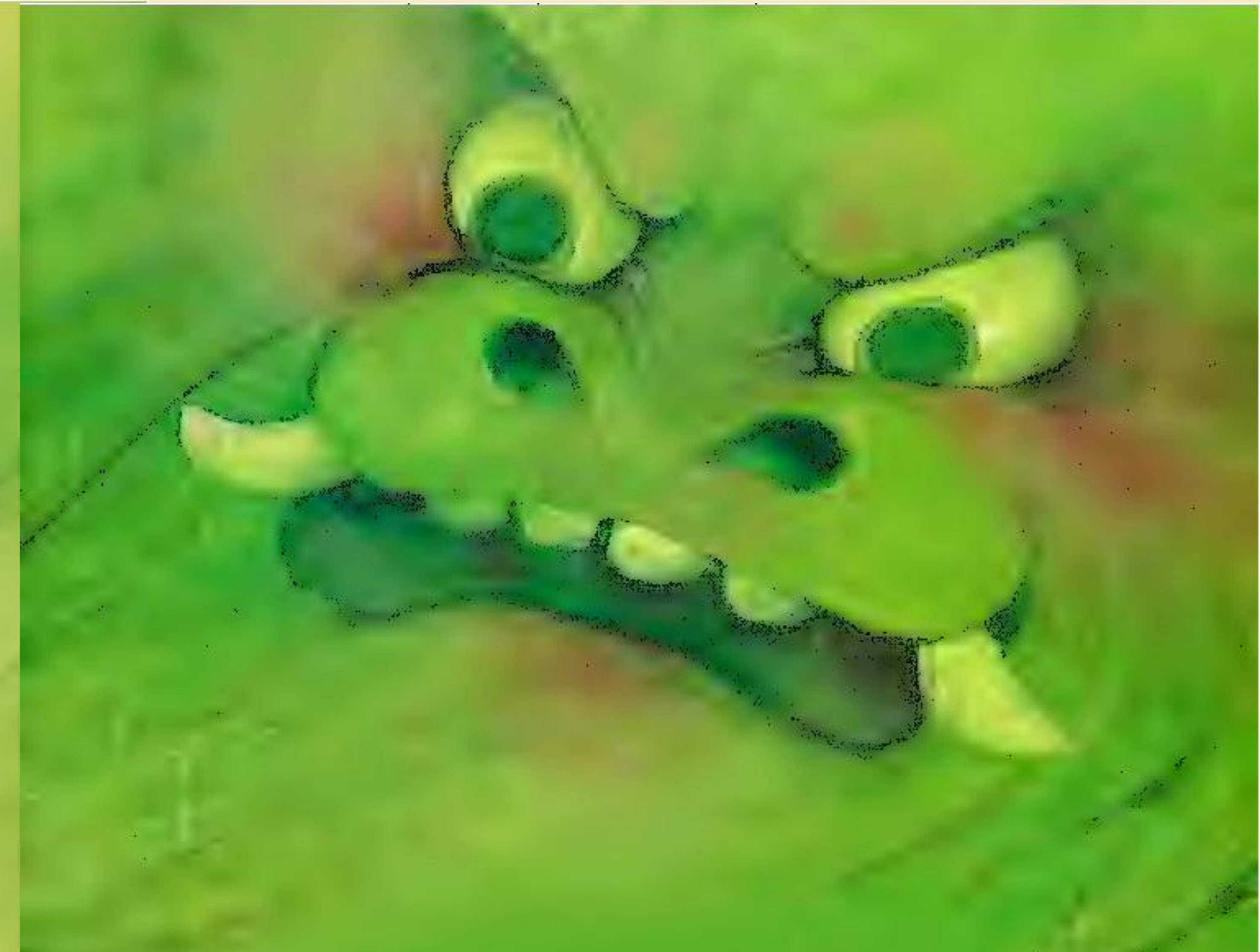

शू फ़ा खुश ग्रामीणों को देखती है.
अचानक, पहाड़ की आवाज़ चिल्लाती है,
"शू फ़ा, तुमने मेरा रहस्य बता दिया!
अब तुम्हें हमेशा के लिए मेरी नदी में ही रहना होगा.”
शू फ़ा रोने लगती है, "कृपया मुझे अपने परिवार से अलविदा कहने दो!"
आवाज़ बड़बड़ाई, "जाओ. लेकिन आज रात को यहाँ वापस आना,"

शू फ़ा पहाड़ से नीचे भागती है.
"मैं क्या कर सकती हूँ?" वह सोचती है.
"मैं नदी में नहीं रहना चाहती!"

शू फ़ा चाचा को ढूँढ़ती है.
वह उन्हें समस्या बताती है.
"मेरे पास एक योजना है,"
चाचा ने कहा.

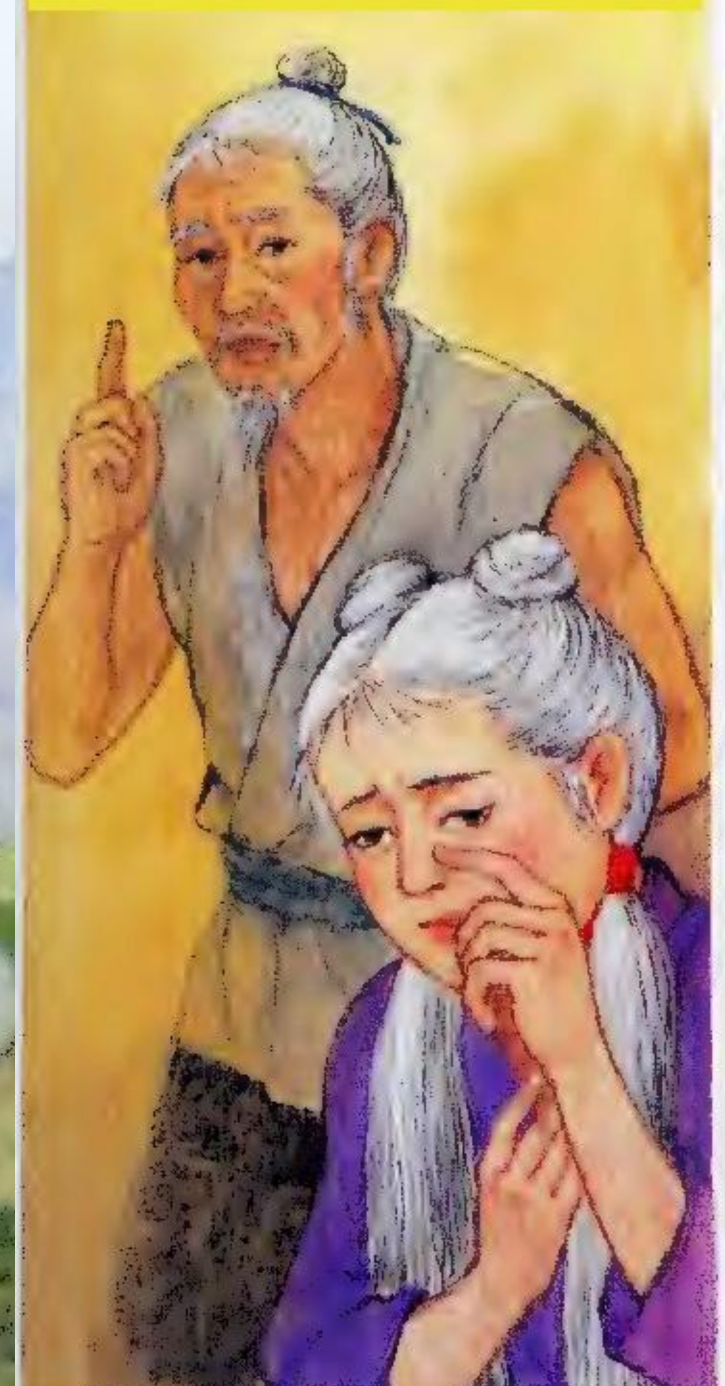

चाचा ने पूरे दिन काम किया.
उन्होंने पत्थर की एक मूर्ति बनाई.

उस रात, शू फ़ा पहाड़ पर गई.
चाचा वहाँ पर थे.
"यह मूर्ति पहाड़ की आवाज़ को धोखा देगी,"
चाचा ने कहा.
"मुझे बस तुम्हारे बाल चाहिए."
चाचा ने शू फ़ा के लंबे, सफ़ेद बाल काटे.
उन्होंने उन बालों को मूर्ति पर लगाया.

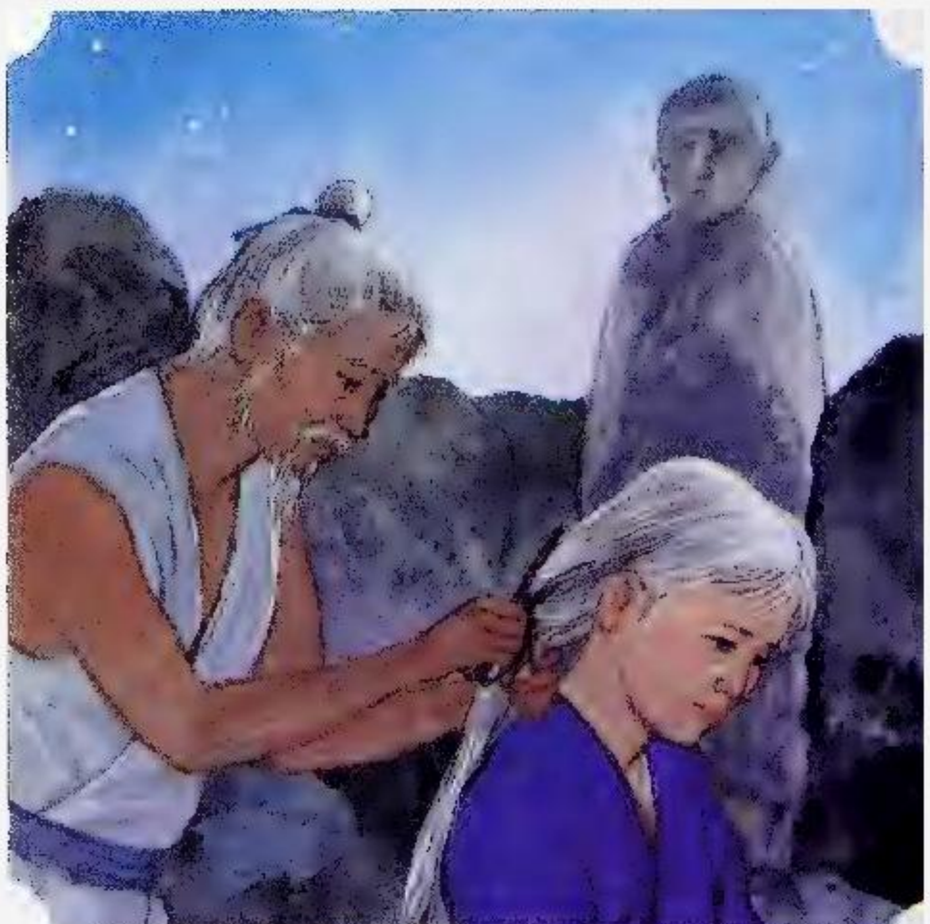

चाचा ने मूर्ति को नदी में डाल दिया.
मूर्ति के ऊपर से पानी बहता गया.
सफ़ेद बालों का एक झरना बन गया.
पहाड़ की आवाज़ ने मूर्ति से कहा,
"नमस्ते, शू फ़ा! तुम्हारी चाल काम कर गई!

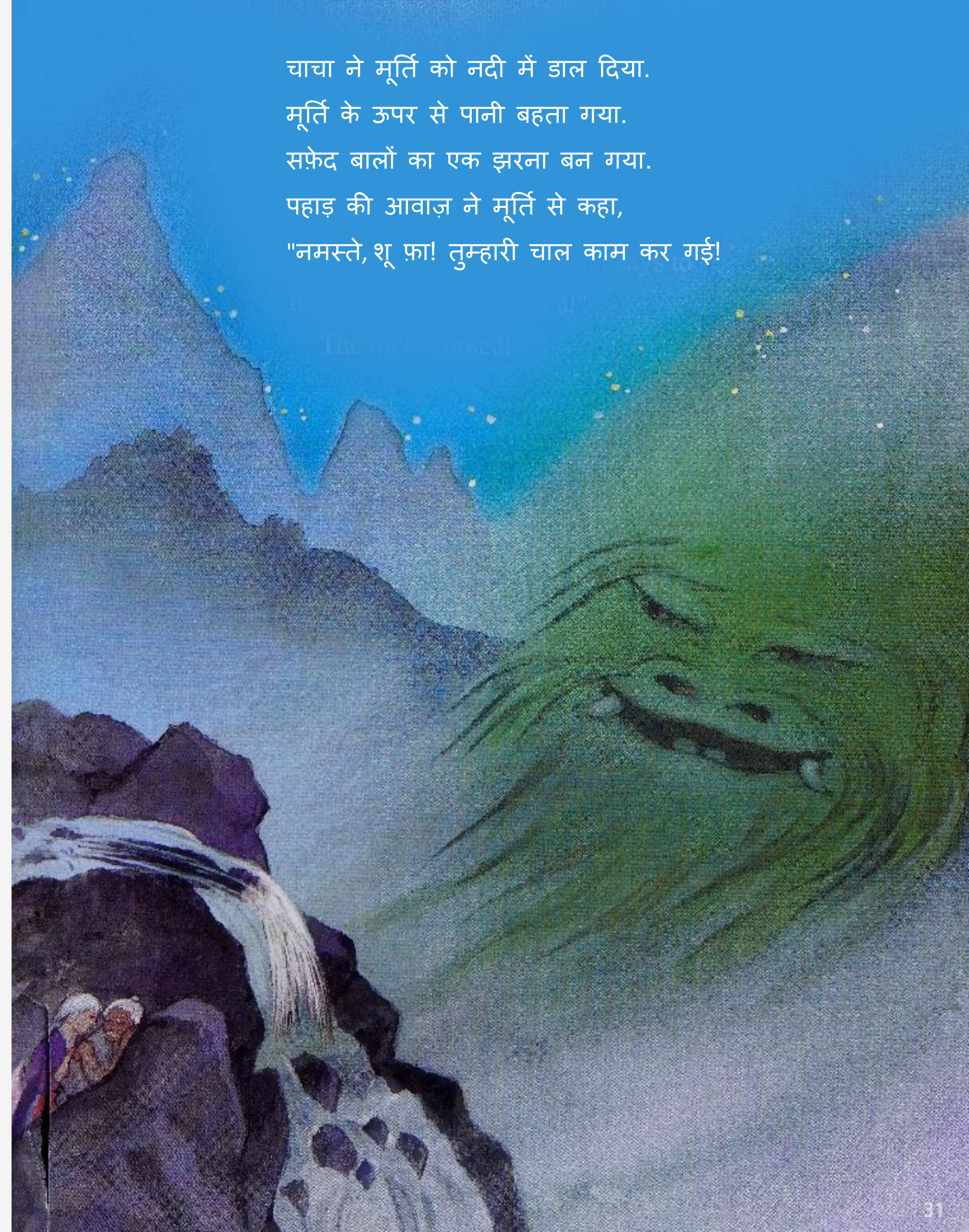

आज भी वो झरना गाँव की ओर बहता है.

वहां की ज़मीन हरी-भरी है.

लोग खुश हैं.

शू फ़ा के बाल अब फिर से लंबे और काले हो गए हैं.